# हीर बना परिवार का हीरा

**हीर सिंह**

**गांव: बावतरा, जिला: जालौर (राजस्थान)**

**मोबाइल: 9660100897**

मध्यप्रदेश में हुए किसान आंदोलन में जींस-टी शर्ट धारी किसानों की फोटो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई और क्या जिंस-टी शर्ट पहने युवा किसान है, इस बात पर काफी बहस भी हुई। लेकिन, सच यह है कि जिंस टी-शर्ट पहने युवा आधुनिक कृषि करने वाले किसान ही है। गौरतलब है कि किसान पुत्र ही है, जो पढ़ाई के साथ-साथ खेती करने का मादा रखते है। ऐसे ही किसान है, जो इंजीनियरिंग की पढ़ाई के साथ-साथ ड्रेगन, चिया, तुलसी, किनवा का ना केवल उत्पादन कर रहे है। बल्कि, इन फसलों को प्रसंस्कृत कर अच्छा लाभ भी कमा रहे है।

किसान परिवारों के पढ़े-लिखे युवा अब खेती की सूरत बदलने लगे है। जिंस-टीशर्ट पहने युवा ना केवल नई-नई फसलों की जानकारी इंटरनेट, यू-ट्यूब चैनल देखकर प्राप्त कर रहे है। बल्कि, नई फसलों को धरातल देने के साथ प्रसंस्करण और ऑनलाइन विपणन में भी हाथ आजमा रहे है। ऐसे में सरकार को भी युवा दिलों की धड़कन को पहचानना होगा। ताकि, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान सहित दूसरे प्रदेशों किसान अपने हक के लिए सड़क पर नहीं उतरे। हम बात कर रहे है जालौर जिले के बावतरा गांव के किसान हीर सिंह की, जो कम्प्यूटर साइंस से इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे है। साथ में, बाजार मांग आधारित नई-नई फसल की खेती भी । परिवारजन भी युवा हौंसले को बखूबी परवाज दे रहे है। गौरतलब है कि इस किसान के पास महज 8-9 बीघा कृषि भूमि है। पढ़ाई के साथ-साथ पिताजी के साथ खेती भी करता है। साथ ही, फसल विपणन, प्रदेश में पैदा हो सकने वाली नई-नई फसल की जानकारी पिताजी को उपलब्ध करवाना और फसल का प्रस्संकरण करने की जिम्मेदारी भी उठा रहे है। ऐसे में कहा जा सकता है कि किसान पुत्र अपने परिवार की आर्थिक समृद्धि बढ़ाने में ऑलराउण्डर की भूमिका निभाने लगे है। यदि तालिम हासिल करने के बाद नौकरी नहीं भी मिले तो किसान के साथ सफल उद्यमी के रूप में पहचाने जायेंगे। उन्होंने बताया कि मेरे खेती से जुड़ने से पूर्व पिताजी सरसों, अरंड़ी, बाजरा सहित दूसरी परम्परागत फसल का उत्पादन करते थे। इससे सालाना 2 से सवा 2 लाख रूपए की आय होती थी। लेकिन, अब परिवार की आय कई गुना बढ़ चुकी है। सिंचाई के लिए

बोरवैल है। पानी, जमीन सबकुछ अच्छा होने के बाद आय नहीं बढने की बात मुझे अखरती थी। इसी के चलते मैं खेती से जुड़ा और सफल रहा। किनवा, चिया, तुलसी की फसल आय दे रही है। वहीं, ड्रेगन की खेती से आय मिलना शेष है।

## दिल्ली पहुंची चिया

औषधीय फसल चिया का तीन बीघा क्षेत्र में उत्पादन इस वर्ष लिया। इसमें 1 बीघा फसल प्रदर्शन और 2 बीघा क्षेत्र में अपने खर्च पर फसल का उत्पादन किया। 500 किलोग्राम उत्पादन मिला। दिल्ली में एक जानकार को 100 रूपए प्रति किलो की दर से चिया को विपणन किया। वर्तमान में इस फसल के प्रति किलो भाव 300-400 रूपए प्रति किग्रा चल रहे है। वहीं, 400 पौधे ड्रेगन के खेत में लगाये हुए है। इनसे उत्पादन मिलने में अभी समय लगेगा।

## किनवा फलेक्स के उत्पादक

गत पांच साल से किनवा फसल का उत्पादन ले रहा हूँ। किनवा की खेती सबसे पहले एक संस्था ने शुरू करवाई। लेकिन, अब हर साल इस फसल का उत्पादन लेने लगा हूँ। किनवा से अधिक लाभ कमाने के लिए इसकों प्रसंस्कृत करना शुरू किया। छिलका उतारने की मशीन खरीदी। लेकिन, आशातीत परिणाम नहीं मिले। फिर, स्वयं ने मशीन तैयार की। अब एक साथी के साथ मिलकर किनवा का आटा, किनवा प्लेक्स सहित 9 उत्पाद तैयार कर अमेजॉन बावतरा किनवा ब्रांड नाम से 300-400 रूपए प्रति किग्रा की दर से विपणन कर रहा हूँ। इस वर्ष 100 टन किनवा की बिक्री ऑनलाइन कर चुका हूँ।

*साभार हलधर टाइम्स। वर्ष 12। अंक 33। 19-25 जून 2017*